ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.18, NO.1, JAN-JUNE,2023 /103

अदम गोंडवी की रचनाओं में स्त्री चेतना

– *चंद्र देव सिंह विशेन एवं ** डॉ. अनुराग मिश्र
*शोधछात्र–,हिंदी एवं ** शोध पर्यवेक्षक
का.सु.साकेत पी.जी.,अयोध्या

शोध सार–किसी भी समय व समाज की सही दशा ज्ञात करनी हो तो उस समय व समाज की स्त्रियों की स्थिति पर विचार करना होगा। प्रश्न यह है कि स्त्रियों की दशा पर विचार करने के लिए क्या स्त्रियों द्वारा लिखित साहित्य पर ही विचार किया जाएगा? या महिला रचनाकारों द्वारा महिलागाथा को ही स्त्री विमर्श माना जाएगा। महिलाएं भी समाज का अंग है समाज में स्त्री पुरुष दोनों का सहजीवन है। पुरुष रचनाकारों द्वारा भी अपनी रचनाओं में ऐसी महिला चरित्रों को प्रमुखता दी गई है जो अपनी स्वतंत्रता, शोषण, गरीबी, अशिक्षा, असमानता, अस्तित्व आदि के लिए संघर्षरत रही हैं। महिला लेखन केवल महिला से नहीं बल्कि समग्र समाज से जुड़ा हुआ है इसलिए समाज में रहने वाला हर व्यक्ति जो महिलाओं के संघर्ष, स्वतंत्रता और अधिकार चेतना को सशक्त बनाने हेतु उसे स्वर दे।उसे स्त्री विमर्श के दायरे में रखा जाना चाहिए। चित्रा मुद्गल ने तो यहां तक कहा है कि 'मर्दों ने स्त्री विमर्श को ज्यादा ठीक से समझा है।' अदम गोंडवी की स्त्री चेतना का मूल्यांकन उनकी स्त्री विषयक चिंता के पैमाने पर होना चाहिए ना कि लिंग के पैमाने पर।

बीज शब्द– चेतना,संवेदना, महिला आरक्षण, पुरुषवादी मानसिकता, क्रीतदासी, संघर्षधर्मिता आदि।

अदम गोंडवी की रचनाओं में स्त्री चेतना–

अगर हम संवेदना और सहानुभूति को खानों में ना बांटे तो हम देखेंगे कि अनेक कवियों लेखकों का साहित्य दलित विकेमर्श या स्त्री विमर्श की परिधि का अतिक्रमण कर जाता है। मानवीय संवेदना को स्त्री, दलित या सामान्य संवेदन में विभक्त करना ईश्वरीय विधान के खिलाफ है। स्त्री–विमर्श समाज निरपेक्ष नहीं हो सकता।यह 'जख्मी औरतों का प्रतिघाती दस्ता' बनकर न रह जाए इसलिए नर–नारी की परस्परता और समन्वय को ध्यान में रखकर भी इस विमर्श का मूल्यांकन होना चाहिए। स्त्री–विमर्श के संदर्भ में ममता कालिया का यह साहसिक मत उल्लेखनीय है– ''लिखने के बाद समग्र साहित्य की धारा के बीच मूल्यांकन होना होगा। ऐसा नहीं हो सकता कि आप महिला लेखन के अंतर्गत १० सतही लेखिकाओं को शामिल करें सिर्फ इसलिए कि वे स्त्रियां हैं।''१

ममता कालिया का स्पष्ट मत है कि लेखन के बाद रचना साहित्यिक– सामाजिक वस्तु हो जाती है।उसका मूल्यांकन समाज की मुख्यधारा में होगा। वह लेखन में महिला आरक्षण की मांग नहीं करती। यदि स्त्री–विमर्श को महिला आरक्षण तक सीमित ना किया जाए तो अनेक पुरुषों ने स्त्रियों के अस्तित्व, अधिकार, स्वावलंबन, स्वाधीनता, समानता और आर्थिक स्वतंत्रता के पक्ष में लिखा है। अदम गोंडवी की स्त्री विषयक चिंता उनकी रचनाओं में बिखरी पड़ी हैं।

अदम गोंडवी आम जन के सबसे मजबूत पैरोकार के रूप में उभर कर सामने आते हैं। आम जन में दलित भी हैं, स्त्री भी हैं, किसान व मजदूर भी हैं। अदम गोंडवी गजल को माशूक के लटको झटको से आगे 'बेवा के माथे की शिकन' तक ले चलने का आह्वान करते हैं–

''भूख के एहसास को शेरों– सुखन तक ले चलो,
या अदब को मुफलिसों की अंजुमन तक ले चलो।
जो गजल माशूक के जलवों से वाकिफ हो गयी,
उसको अब बेवा के माथे की शिकन तक ले चलो।''२

गजल को बेवा के माथे की शिकन तक ले चलने की घोषणा अदम की स्त्री–विषयक चिंताओं को रेखांकित करती है। इस विषय में जय चक्रवर्ती अपने लेख 'हिंदी गजल की समाजधर्मी विशेषताएं' में लिखते हैं–''गजल के इस अदब को मुफलिसों की अंजुमन और बेवा के माथे की शिकन तक ले चलने का आह्वान हिंदी गजल के अलावा और कहीं नहीं है।''३

अदम गोंडवी की गजलें हमेशा सामाजिक सरोकारों को लेकर आगे बढ़ी हैं। स्त्री जीवन की विषताएं गोंडवी की गजलों में बड़ी तीव्रता से अभिव्यक्त हुई हैं। उनकी गजलों में प्रतिरोध के अनेक रूप देखने को मिल जाएंगे। अदम गोंडवी की प्रसिद्ध नज्म 'चमारों की गली' जितना दलित–विमर्श के संदर्भ में प्रासंगिक है उतनी ही स्त्री–विमर्श के संबंध में भी। कृष्णा दलित भी थी और स्त्री भी।कृष्णा की दुर्दशा देखने के लिए अदम गोंडवी धर्म,संस्कृति और नैतिकता के ठेकेदारों व मंत्रीगणों को अपने गांव आने का निमंत्रण देते हैं–

''मैं निमंत्रण दे रहा हूं आएं मेरे गांव में।
तट पर नदियों के घनी अमराइयों की छांव में।
गांव जिसमें आज पांचाली उघाड़ी जा रही।
या अहिंसा की जहां पर नथ उतारी जा रही।
हैं तरसते कितने ही मंगल लंगोटी के लिए।
बेचती है जिस्म कृष्णा आज रोटी के लिए।''४

कृष्णा का रोटी के लिए जिस्म बेचना कोई शौक नहीं है बल्कि परिस्थितियों के घटाटोप अंधेरे में उसे पुरुषवादी मानसिकता ने उस जगह पहुंचाया जहां स्त्री के पास कोई विकल्प नहीं बचता। गोंडवी के अनुभवों की तीखी चुभन,टीस व टिप्पणी पाठकों के भीतर बौखलाहट पैदा करती है। कृष्णा तो आधुनिक समय की दलित नारी हैं। प्राचीनकाल से ही स्त्रियों की देह पुरुषों के निशाने पर रही है। गोंडवी वासना के गहरे कुहासे को दिखाने की कोशिश करते हैं।

''मत्स्यगंधा फिर कोई होगी किसी ऋषि का शिकार,
दूर तक फैला हुआ गहरा कुहासा देखिए।''५

× × ×

''जब हुई नीलाम कोठे पर किसी की आबरू,
फिर अहल्या का सरापा जिस्म पत्थर हो गया।''६

भारतीय संस्कृति में 'यत्र नार्यस्तु पूज्यंते रमंते तत्र देवता' कहकर नारी का सम्मान किया गया है। उसे पूज्य भाव से सराहा गया है।अदम गोंडवी ने भी भारतीय परंपरा का सम्मान करते हुए स्त्री को महान बताकर अकीदत से सर झुका देने की बात की है–

''कहीं हो जिक्र अकीदत से सर झुका देना,
बड़ी अजीम ये औरत की जात होती है।''७

लेकिन आदर्शवादी चिंताधारा के समानांतर यथार्थवादी धारा भी चलती रही जो स्त्री को क्रीतदासी एवं पण्य की वस्तु मानत था। युद्ध में स्त्रियां लूट का माल थीं। वे अनमोल निधि थी लेकिन वस्तु के रूप में। कमोवेश स्वयं को वस्तु के रूप में स्वीकार कर लेना स्त्री दासता–परतंत्र का कारण बना। समाज में स्त्री की अस्मिता, अस्तित्व, स्वतंत्रता का युगों से हनन हुआ और उन्हें दोयम दर्जे का नागरिक व नानप्रोडक्टिव माना गया।ऐगेल्स ने अपनी पुस्तक 'परिवार, संपत्ति और राज्य की उत्पत्ति' में कहा था कि 'परिवार में पुरुष सामंत होता है और स्त्री सर्वहारा।' सामान्य परिवारों में यह स्थिति अभी बनी हुई है और स्त्रियां पुरुषवादी वर्चस्व का दंश झेल रही है। सामंतवादी सोच पर करारा व्यंग्य करते हुए अदम गोंडवी ने व्यंग किया–

''औरत तुम्हारे पांव की जूती की तरह है,
जब बोरियत महसूस हो घर से निकाल दो।''८

गोंडवी यह दावा नहीं करते कि उन्होंने नारी–विमर्श की सर्वाधिक या सर्वोत्तम रचनाएं की हैं।वे स्त्रियों के मांसल देहवादी, आनंदवादी, श्रृंगार का वर्णन भी नहीं करते बल्कि परंपरागत सौंदर्य प्रतीकों से ज्यादा महत्व भूख और गरीबी को देते हैं। गोंडवी के अनुसार अगर फागुन की दिलकश शाम भूख में गुजर जाए तो किसी भी स्त्री के हुस्न का जादू उतर जाएगा। उनके मत में भूख के आगे स्त्रियों को अपना शरीर, श्रृंगार और यौवन बेचकर रोटी कमाना पड़ता है। कोई शौक से धंधे में नहीं उतरता। भूख और गरीबी के आगे कई स्त्रियों को अपने स्त्रीत्व की कुर्बानी देनी पड़ती है–

''यह रोटी कितनी महंगी है ये वो औरत बताएगी,
कि जिसने जिस्म गिरवी रखके ये कीमत चुकाई है।''९

अदम गोंडवी ने मात्रात्मक रूप से स्त्री समस्या संबंधी शेर भले ही ज्यादा नहीं कहे लेकिन उनके स्त्री विषयक शेर गुणात्मक अवश्य है। यह गुणात्मकत इसलिए आई क्योंकि उन्होंने कल्पना की ऊंची उड़ान नहीं भरी बल्कि वे सामान्य ग्रामीण स्त्री के मन में उतरे और उसकी पीड़ा, आकांक्षा,द्वंद,संघर्ष,चेतना और अस्मिता से जुड़े मर्मस्पर्शी स्थलों की पहचान करते हुए शेर कहे।उन्होंने परंपरागत सौंदर्य प्रतीकों को छिन्न–भिन्न करते हुए भुखमरी और गरीबी के खिलाफ मोर्चाबंदी की–

''जुल्फ, अंगड़ाई, तबस्सुम, चांद,आईना, गुलाब।
भुखमरी के मोर्चे पर ढल गया इनका शबाब।''१०

तल्ख सच्चाई से रूबरू होने के कारण अदम और उनके सौंदर्यबोध के बीच भूख और गरीबी खड़ी मिलती है।चर्नीशेव्स्की ने स्पष्ट कहा था कि यथार्थ जीवन का सौंदर्य ही सच्चा सौंदर्य है और यथार्थ की पुनर्रचना ही कला का वास्तविक लक्ष्य होना चाहिए। वरिष्ठ आलोचक श्रीधर मिश्र के शब्दों में 'अदम की गजलों में यथार्थ जीवन का सौंदर्य है जो हमें अपने जीवन के यथार्थ से रूबरू तो कराता ही है साथ ही यथार्थ के पैने दांतो से लहूलुहान मनुष्यता के पक्ष में खड़े होने की नसीहत भी देता है।''११

अदम गोंडवी के यथार्थवादी लेखन में स्त्री–विमर्श का देहवादी, आनंदवादी सौंदर्य, जामो–मीना की खनक, चांदनी की छांव नहीं बल्कि रोटी और भूख मिलती है–

''हुस्न की मासूमियत की जद में रोटी आ गई,
चांदनी की छांव में भी फूल अंगारे हुए।''१२

स्त्री–विमर्श में मुक्ति का आशय सिर्फ देहमुक्ति नहीं है।महिला लेखन स्वाधीनता का घोषणा पत्र रहा है।१९८६ ईस्वी में जब राजेंद्र यादव ने 'हंस'पत्रिका का पुर्नप्रकाशन किया तो उन्होंने दलित और स्त्री विमर्श को नया तेवर दिया। उन्होंने स्त्रियों में जागरूकता का जयघोष किया लेकिन यह जागरूकता देहवादी आनंदवाद का पर्याय बन गई।उन्होंने स्त्रियों को बेडरूम, बाथरूम,रजाई प्रसंग और यौन उन्मुक्तता का सीधा, सरल नुस्खा बता दिया और स्त्री–विमर्श के नाम पर महिलाओं ने इन विषयों पर धड़ाधड़ लेखन किया तथा राजेंद्र यादव जी ने ऐसी रचनाओं को खूब प्रकाशित किया। अदम जी समसामयिक घटनाओं–प्रसंगों पर पैनी नजर रखते थे।उन्होंने स्त्री–विमर्श के नाम पर मुक्तकामी–देहवादी–आनंदमार्गी लेखन से खिन्न होकर लिखा था–

''तुलसी से राजेंद्र तक बस एक ही रफ्तार है,
सेक्स को लेकर हमारी जेहनियत बीमार है।''१३

गोंडवी के अनुसार पेट भरने के बाद ही सौंदर्यचेतना आती है। बाजरे की छरहरी कलगी, जूही की कली सड़क पर बिकने को लाचार हो जाती है तथा भुखमरी की धूप में अस्मत की बेल भी कुम्हला जाती है–

''भुखमरी की धूप में कुम्हला गई अस्मत की बेल,
मौत के लम्हात से भी तल्खतर है जिंदगी।''१४

गोंडवी की गजलों में सीता, द्रौपदी, मत्स्यगंधा, जुलेखा, धनिया, कृष्णा से लेकर अमृता प्रीतम जैसे स्त्री पात्रों की भरमार है।अदम के स्त्री चरित्र काल्पनिक नहीं बल्कि पौराणिक,ऐतिहासिक,वास्तविक हैं।पौराणिक, ऐतिहासिक चरित्र प्रतीकों के रूप में हैं जबकि वास्तविक चरित्र जिंदगी की तल्ख हकीकतों को बेपर्दा करने वाले हैं। वे महिलाओं में आत्मविश्वास जगाने के लिए अमृता प्रीतम की नज्म को वर्गे–गुल नहीं शमशीर बताने वाले शायर हैं।

स्पष्ट है कि अदम गोंडवी की गजलों में स्त्री पात्रों, उनकी दुश्वारियां और चिंताओं की सशक्त उपस्थिति है लेकिन उनके स्त्री चरित्र आधुनिक नहीं है।वे नारी विमर्श की महिलाओं की तरह आत्मनिर्भर, साहसी, बोल्ड और संघर्षधर्मी नहीं है। अदम गोंडवी की गजल में ग्रामीण भारत की शोषित, अशिक्षित, पराजित और यथास्थितिवादी नारी की झलक मिलती है जो अपनी दशा बदलने के लिए प्रयास नहीं करती। फिर भी इससे अदम गोंडवी की स्त्री विषयक चिंता कम नहीं आंकी जा सकती। उन्होंने अपने लिखित एवं घोषित वक्तव्य में स्त्री के अस्तित्व, स्थान और संकट का सम्यक अवलोकन किया है।

संदर्भ सूची–

1. कालिया ममता ,स्त्री विमर्श का यथार्थ, पृष्ठ –६७
2. अदम गोंडवी, समय से मुठभेड़ ,पृष्ठ–४७
3. संवदिया,जनवरी–मार्च २०२२, पृष्ठ–३०
4. अदम गोंडवी, समय से मुठभेड़, पृष्ठ–१०३
5. अदम गोंडवी ,धरती की सतह पर, पृष्ठ –३१
6. वही,पृष्ठ–४३
7. वही, पृष्ठ–२६
8. अदम गोंडवी ,समय से मुठभेड़, पृष्ठ–५६
9. अदम गोंडवी, धरती की सतह पर , पृष्ठ –५६
10. अदम गोंडवी ,समय से मुठभेड़,पृष्ठ–४६
11. अलाव संयुक्तांक, मई–अगस्त २०१५, पृष्ठ–२३४–२३५
12. अदम गोंडवी, समय से मुठभेड़, पृष्ठ–८६
13. अदम गोंडवी,धरती की सतह पर, पृष्ठ–८६
14. अदम गोंडवी,धरती की सतह पर, पृष्ठ–७६